पर्वत प्रदेश में पावस

-सुमित्रानंदन पंत

काव्यांश

'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता प्रकृति प्रेमी कवि सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित है। उन्हें पर्वतीय प्रदेश से विशेष लगाव था। शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जिसका मन पहाड़ों पर जाने को न मचलता हो। जिन्हें सुदूर हिमालय तक जाने का अवसर नहीं मिलता है वे अपने आसपास के पर्वत प्रदेशों में जाकर प्रकृति का आनंद अवश्य लेते हैं । ऐसे में यदि किसी कवि की कविता पढ़कर घर की चारदीवारी में बैठे–बैठे ही सुंदर प्राकृतिक दृश्यों का अनुभव प्राप्त हो जाए तो कहना ही क्या है। ऐसा ही कुछ अनुभव इस कविता को पढ़कर भी होता है।

वस्तुपरक प्रश्न

[1 अंक]

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

उड़ गया अचानक लो भूधर,
फड़का अपार पारद के पर।
रव-शेष रह गए हैं निर्झर,
है टूट पड़ा भू पर अंबर।

(क) कवि ने क्या बाकी रह जाने की बात इन पंक्तियों में कही है?
(i) वर्षा का जल (ii) घने बादल
(iii) झरनों का सौंदर्य (iv) झरनों की आवाज़

(ख) भू पर अंबर टूट पड़ने का अर्थ है—
(i) बादल फटना
(ii) पहाड़ गिर जाना
(iii) बहुत तेज़ वर्षा होना
(iv) बिजली गिरना

(ग) भूधर का उड़ जाना अर्थात्—
(i) पहाड़ टूट जाना
(ii) पर्वत अदृश्य हो जाना
(iii) पेड़ टूट जाना
(iv) पेड़ अदृश्य हो जाना

(घ) प्रस्तुत काव्यांश में किस स्थिति का वर्णन है?
(i) बादल छा जाना (ii) धूप निकलना
(iii) सूर्य उदय होना (iv) तूफ़ान आना

उत्तर : (क) *(iv) झरनों की आवाज़*

व्याख्यात्मक हल : बारिश होने पर सब कुछ अदृश्य हो गया था । केवल झरने बहने की आवाज़ ही सुनाई दे रही थी।

(ख) *(iii) बहुत तेज़ वर्षा होना*

(ग) *(ii) पर्वत अदृश्य हो जाना*

व्याख्यात्मक हल : बादलों ने पर्वतों को पूरी तरह ढक लिया था मानो कि पर्वत वहाँ से गायब हो गए हों।

2. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए—

धँस गए धरा में सभय शाल,
उठ रहा धुआँ जल गया ताल।
यों जलद-यान में विचर-विचर,
था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

(क) धँस गए धरा में सभय शाल - पंक्ति में कौन सा अलंकार है?
(i) उपमा (ii) रूपक
(iii) मानवीकरण (iv) अनुप्रास

(ख) कहाँ से धुआँ निकलता नज़र आ रहा है ?
(i) वृक्षों से (ii) तालाब से
(iii) पर्वतों से (iv) झरनों से

(ग) इस काव्यांश में इंद्रजाल किसे कहा गया है?
(i) झरनों के शोर को
(ii) पर्वतीय क्षेत्र में बारिश के दृश्य को
(iii) दर्पण रूपी तालाब को
(iv) आकाश को छूते वृक्षों को

(घ) प्रस्तुत काव्यांश उस स्थिति को दर्शा रहा है जब—
(i) तेज़ धूप निकल आई थी
(ii) बादल छा गए थे
(iii) तेज़ वर्षा होने लगी थी
(iv) अंधकार छा गया था

उत्तर : (क) *(iii) मानवीकरण*

व्याख्यात्मक हल : डरना और डरकर छुप जाना मानव का व्यवहार है और यही व्यवहार वृक्षों को करते हुए दिखाया गया है।

(ख) *(ii) तालाब से*

व्याख्यात्मक हल : बारिश का पानी तालाब में गिर रहा है, तालाब का पानी फुहार बनकर ऊपर उठ रहा है। मानो तालाब जल रहा हो और उसमें से धुआँ निकल रहा हो।

(घ) *(iii) तेज़ वर्षा होने लगी थी*

वर्णनात्मक प्रश्न

[2 - 5 अंक]

लघु उत्तरीय प्रश्न (25 – 30 शब्द)

[2 अंक]

3. पावस में गिरि का गौरव कौन गा रहा है और उत्तेजना का संचार वह कैसे कर पाता है? [CBSE 2016]

उत्तर : कवि ने वर्षा ऋतु के दौरान पर्वतीय क्षेत्र के अलौकिक सौंदर्य का वर्णन किया है। वहाँ ऊँचाई से बहते हुए झरने झर-झर की ध्वनि उत्पन्न कर रहे हैं, जिसमें एक मधुर संगीत-सा महसूस हो रहा है। इसी आवाज को कवि ने झरनों द्वारा पर्वतों के गौरव में गाए जाने वाला गीत कहा है और इस मधुर संगीत को सुनकर नस-नस में आनंद और उत्तेजना का संचार हो रहा है।

4. कवि पंत ने पर्वत की विशालता को किस प्रकार चित्रित किया है? [CBSE 2013]

उत्तर : कवि सुमित्रानंदन पंत ने पर्वतीय क्षेत्र का जो सजीव वर्णन कविता में किया है उसे पढ़कर ऐसा महसूस होता है मानो हम स्वयं वहाँ उपस्थित हैं। दूर तक फैले पर्वतों की विशालता को दर्शाने के लिए कवि ने 'मेखलाकार पर्वत अपार' शब्दों का प्रयोग किया है, जिससे स्पष्ट है कि वे पर्वत अपार अर्थात् दूर तक और मेखलाकार यानि गोलाकार में फैले हुए थे।

5. बादलों के उठने तथा वर्षा होने का चित्रण पर्वत प्रदेश में पावस के आधार पर अपने शब्दों में कीजिए। [CBSE 2016]

6. वृक्ष आसमान की ओर चिंतित होकर क्यों देख रहे हैं? 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर लिखिए। [CBSE 2016]

उत्तर : पर्वतों के ऊपर लगे ऊँचे-ऊँचे वृक्ष बिलकुल स्थिर थे, उनमें कोई हलचल नहीं हो रही थी। उन्हें देखकर कवि को महसूस हुआ मानो वे पर्वतों के हृदय से निकलने वाली ऊँची-ऊँची आकांक्षाएँ हों। ऊँचे वृक्षों के माध्यम से पर्वत आकाश को छूना चाहते थे, किंतु झूने में असमर्थ थे इसलिए उदास और चिंतित नज़र आ रहे थे। यह कहकर कवि ने प्रकृति में मानवीय भावों का बिंब प्रस्तुत किया है।

एहतियात

- *वृक्ष उदास नहीं हैं बल्कि उनकी स्थिरता में कवि को उनकी उदासी नज़र आ रही है।*

7. तालाब में पर्वतों का प्रतिबिम्ब देखकर कवि ने क्या कल्पना की है?

8. 'है टूट पड़ा भू पर अंबर', पर्वत प्रदेश में पावस कविता में कवि ने ऐसा क्यों कहा है ? [CBSE 2020]

उत्तर : वर्षा ऋतु में आकाश बादलों से आच्छादित हो जाता है। जब वे घने बादल तेजी से बरसने लगते हैं तो ऐसा लगता है मानो आकाश ही धरती पर टूट पड़ा हो। ऐसा ही दृश्य कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' के माध्यम से कवि ने प्रस्तुत किया है। पर्वतीय क्षेत्र में नज़र आने वाले विशाल पर्वतों और आकर्षक झरनों को मूसलाधार वर्षा द्वारा ढक लिए जाने का प्रभावी शब्द-चित्र अंकित किया है।

9. वृक्षों को कवि ने उच्चाकांक्षाएँ क्यों कहा है?

उत्तर : मानव के हृदय में अक्सर आगे बढ़ने की, ऊँचा उठने की आकांक्षाएँ जन्म लेती रहती हैं। उन्हें केवल महसूस किया जा सकता है, देखा नहीं जा सकता। पर्वतीय क्षेत्र में बड़े-बड़े पहाड़ों पर लगे ऊँचे-ऊँचे वृक्ष देखकर कवि ने ऐसी कल्पना की है मानो वह पर्वतों के हृदय से निकलने वाली ऊँची-ऊँची आकांक्षाएँ हों। वृक्ष इतने ऊँचे हैं कि आकाश को छूते हुए से प्रतीत हो रहे हैं किंतु वे गंभीर और उदास नज़र आ रहे हैं क्योंकि वे पर्वतों की आकाश को छूने की इच्छा को पूरा करने में असमर्थ हैं।

10. कवि ने ऐसा क्यों कहा है कि पर्वत बादलों के पंख लगाकर उड़ गए हैं?

11. झरनों की तुलना किससे की गई है और क्यों? [CBSE Sample Paper 2020]

उत्तर : पर्वतीय क्षेत्रों का नजारा बेहद आकर्षक होता है और ऊँचाई से बहते हुए झरने उस दृश्य में चार चाँद लगा देते हैं। कवि ने बहते हुए झरने की आवाज को उनके द्वारा पर्वतों की प्रशंसा में गाए जाने वाला गीत कहा है और झरनों में उत्पन्न होने वाली सफेद झाग के कारण उन्हें सफेद चमकीले मोतियों की लड़ियाँ कहा है। इस प्रकार कवि ने

झरनों की आवाज़ की तुलना मधुर गीत से और उनके श्वेत झागमय सौंदर्य की तुलना मोती की लड़ियों से की है।

12. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर पर्वत के रूप-स्वरूप का चित्रण कीजिए। [CBSE 2018]

निबंधात्मक प्रश्न (60–70 / 80–100 शब्द) [4 एवं 5 अंक]

13. कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2014, 12, 10]

उत्तर : कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' के माध्यम से पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा ऋतु के दौरान उत्पन्न होने वाले परिवर्तनों को दर्शाना प्रकृति प्रेमी कवि 'सुमित्रानंदन पंत' का उद्देश्य है, जिसे वे बहुत खूबसूरती के साथ पूरा करने में सफल हुए हैं। कवि ने विशाल, गोल आकार में फैले पर्वतों की तुलना मेखला से की है और उन पर लगे हज़ारों पुष्पों को पर्वतों की आँखें कहा है, जिनसे वे नीचे तालाब रूपी दर्पण में अपनी छवि को लगातार निहार रहे हैं। एक ओर झरने बह रहे हैं जिनकी आवाज कवि को मधुर संगीत का एहसास करा रही है और उनकी सफेद झाग मोती की लड़ियों-सी सुंदर लग रही है। पर्वतों पर लगे वृक्ष देखकर ऐसा लगता है कि उनके माध्यम से पर्वत आकाश को छूने की कोशिश कर रहे हैं। तभी अचानक घने बादल और मूसलाधार वर्षा इस संपूर्ण दृश्य को ढक लेते हैं।

पावस ऋतु के दौरान पर्वतीय क्षेत्र के पल - पल परिवर्तित होते हुए प्राकृतिक दृश्यों का ऐसा सजीव वर्णन कवि ने किया है कि हम ऐसा महसूस करने लगते हैं मानो हमारे चारों ओर की दीवारें कहीं विलीन हो गई हैं और हम स्वयं उन नज़ारों का आनंद ले रहे हैं।

एहतियात

➡ *प्रतिपाद्य लिखने के लिए छात्र कविता का सार लिखे तथा संदेश लिखते हुए अंत करें।*

14. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में झरने पर्वत का गौरव गान कैसे करते हैं? [CBSE 2012]

15. पर्वत प्रदेश में वर्षा ऋतु में प्राकृतिक सौंदर्य कई गुना बढ़ जाता है परंतु पहाड़ों पर रहने वाले लोगों के दैनिक जीवन में क्या कठिनाइयाँ उत्पन्न होती होंगी, उनके विषय में लिखिए। [CBSE 2015]

उत्तर : इसमें कोई संदेह नहीं कि वर्षा ऋतु के दौरान प्राकृतिक सौंदर्य कई गुना बढ़ जाता है। विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में यह प्राकृतिक दृश्य अलौकिक प्रतीत होने लगता है। बड़े-बड़े पहाड़, पेड़, झरने, तालाब जो पर्वतीय क्षेत्र में आकर्षण का केंद्र बने होते हैं, वे बादल और मूसलाधार वर्षा से अदृश्य हो जाते हैं। पल-पल होने वाला यह परिवर्तन सबको अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। पर्यटकों को यह दृश्य अत्यधिक लुभाते हैं। किंतु वहाँ रहने वाले लोग वर्षा ऋतु में किन परेशानियों का सामना करते हैं, इसकी शायद हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

दिन-प्रतिदिन की जरूरतें पूरी होना मुश्किल हो जाता है। खाद्य एवं पेय पदार्थ उन तक पहुँच नहीं पाते हैं। बच्चों का विद्यालय जाना, अन्य लोगों का अपने रोजगार चलाना बहुत कठिन हो जाता है। यहाँ तक कि अधिक वर्षा से बाढ़ का खतरा बना रहता है, पहाड़ों के धँसकने का भी डर बना रहता है। इस तरह वर्षा ऋतु के दौरान आने वाली अनेक प्राकृतिक आपदाओं का भय वहाँ के निवासियों में हरपल बना रहता है। पर्वतीय इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए यह स्थिति सिर पर लटकी तलवार के समान होती है।

16. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर पावस ऋतु में पर्वतीय क्षेत्र के प्राकृतिक परिवर्तनों और सौंदर्य का वर्णन कीजिए। [Delhi Gov. 2021]

17. पर्वतीय प्रदेश में वर्षा के सौंदर्य का वर्णन 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर अपने शब्दों में कीजिए। [CBSE 2019]

उत्तर : वर्षा ऋतु का इंतजार सभी को सालभर रहता है। बारिश आने से पेड़-पौधे धुल जाते हैं, नदियों में जल स्तर बढ़ जाता है। सभी ओर हरियाली दिखाई देने लगती है। वातावरण में ताज़गी आ जाती है। ऐसा लगता है मानो वर्षा ऋतु धरती में नई जान डाल देती है।

पर्वतीय क्षेत्र में तो वर्षा ऋतु का आगमन बेहद खूबसूरत परिवर्तन लेकर आता है। पल-पल में प्राकृतिक नजारे ऐसे बदलते हैं मानो आँखों के सामने कोई फिल्म के दृश्य बदल रहे हों। बड़े-बड़े पहाड़, पर्वत, तालाब, झरने यूँ ही मन को लुभाते हैं, जब बादल इन्हें ढक लेते हैं तो ऐसा लगता है मानो वे बादलों के पंख लगाकर कहीं उड़ गए हैं। वर्षा शुरू होने पर तो संपूर्ण दृश्य ऐसा गंभीर हो जाता है जैसे भयानक वर्षा ने सब को भयभीत कर दिया हो। यह अलौकिक दृश्य स्वयं इंद्र देवता द्वारा खेला जा रहा कोई जादू का खेल-सा नज़र आता है।